अहिंसा यात्रा के साथ आचार्य महाश्रमण का राजलदेसर से विहार

हिंसा है तभी अहिंसा की प्रासंगिकता है

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 14 फरवरी। 21 दिनों तक जीवन उत्थान के सूत्र पाने वाले राजलदेसरवासियों की आँखे उस समय भावुकता के साथ नम हो गई, जब तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता ने कस्बे से लूणासर की ओर विहार किया।

मर्यादा महोत्सव के सम्पन्न होने के बाद सोमवार को आचार्य महाश्रमण व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने करीब प्रातः 10:21 बजे नाहर भवन से अपनी अहिंसा यात्रा रथ व अपनी धर्मसेना के साथ जैसे ही विहार किया तो पूरा कस्बा उनके साथ हो लिया। चार कि.मी. लम्बा मार्ग जनमेदिनी से जुलूस का रूप लिये हुए थे।

विहार से पूर्व आचार्य महाश्रमण ने नाहर भवन में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे आत्म संतोष हो रहा है कि मैं गुरुवर महाप्रज्ञ की अवशेष रही अहिंसा यात्रा को पुनः शुरू कर रहा हूँ और समय व स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ दीर्घ यात्राएं करने का भाव है। अहिंसा यात्रा का दूसरा चरण प्राणी जगत में स्नेह के जागरण, मानवीय और नैतिक मूल्यों का विकास का सशक्त माध्यम बनेगा। इस यात्रा का उद्देश्य आमजन में अनुकम्पा और नैतिकता का विकास करना है। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा की मंगलकामना की।

गुरुवर को याद कर किया यात्रा का शुभारम्भ

आचार्य महाश्रमण ने सोमवार को आचार्य महाप्रज्ञ की अवशेष रही अहिंसा यात्रा का पुनः शुभारम्भ किया। विहार करने से पूर्व आचार्य महाश्रमण ने गुरुवरों को याद करते हुए मंत्रोच्चारण के साथ यात्रा का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने रत्नादिक मुनियों सहित मंत्री मुनि की वन्दना कर अहिंसा यात्रा रथ के साथ विहार किया। यात्रा में साधु–साध्वियां, समण–समणियां, श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, महिला मण्डल, कन्यामण्डल, ते. यु. प., किशोर मण्डल, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति व मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं व सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रावक–श्राविकाएं एवं जैनेत्तर समाज एवं संस्थाओं के श्रद्धालु चल रहे थे।

लूणासर में बिछाए पलक–पांवड़े

आचार्य महाश्रमण के करीब 11:45 बजे लूणासर गांव पहुँचते ही अणुव्रत समिति कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों ने गुरुवर के स्वागत में पलक पांवडे बिछाए। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने शहीद भगवानसिंह रा. उ. प्रा. विद्यालय में अपने स्वागत अभिनन्दन समारोह में कहा कि भौतिक दृष्टि वाला व्यक्ति भौतिकता में सुख–शान्ति खोजता है और आध्यात्मिक व्यक्ति आत्मा में शांति का अन्वेषण करता है। जिसमें अध्यात्म के प्रति निष्ठा है वह व्यक्ति सत्य का आश्रय लेता है। राष्ट्रसन्त ने हिंसा के इस अतिचार के युग में अहिंसा यात्रा की प्रासंगिकता के विषय में कहा कि हिंसा है तभी अहिंसा की प्रासंगिकता है। आग है तभी पानी की आवश्यकता है। आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा का सन्देश देते हुए कहा कि आदमी यह सोचे कि मेरे कारण किसी को कष्ट न उठाना पड़े। जितना हो सके दूसरों को चित्त समाधि देने का प्रयास करें। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने ''मोड़ो बेगो फूट्यां सरसि घड़ों भर्योड़ो पाप रो'' गीत का संगान किया। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यालयी छात्र–छात्राओं को नशामुक्ति की प्रतिज्ञा दिलवाते हुए कहा कि ''रघुकुल रीत सदा चली आयी, प्राण जाए पर वचन न जाई।''

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि यात्रा से सबको नया मार्ग मिले, नैतिक चेतना जागृत हो तथा यह यात्रा मानव जाति में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मूल्य के लिए सुरक्षा कवच बन कर उभरे। समारोह में मंत्री मुनि, मुनि सुखलाल आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। इससे पूर्व ग्रामवासियों की तरफ से रतनगढ विधायक राजकुमार रिणवां व करणी गौशाला के महावीर सिंह ने आचार्य महाश्रमण को अभिनन्दन पत्र भेंट कर स्वागत किया।

इस अवसर पर स्व. बुद्धमल गिड़िया की स्मृति में गिड़िया परिवार के सौजन्य से जरूरत मंदो को कम्बल वितरण किये गए। इसी क्रम में पन्नालाल विनायक परिवार की तरफ से पांच जरूरतमंद असहायों को एक–एक ट्राईसाइकिल व स्वरोजगार के लिए पांचों अणुव्रत समितियों को जरूरतमंद लोगों के लिए दो–दो सिलाई मशीन भेंट की गई।

लूणासर में आचार्य महाश्रमण के स्वागत कार्यक्रम के दौरान श्रीजैनश्वेताम्बर तेरापंथी सभा राजलदेसर के अध्यक्ष हुणतमल नाहर के सौजन्य से राजलदेसर अणुव्रत समिति सहित निकटवर्ती पांचों देहात अणुव्रत समितियों लूणासर, रतनादेसर, भरपालसर, जोरावरपुरा, बण्डवा को साहित्य भेंट किया गया।

पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पादसस्पृशि।
निर्विशेषमनस्काय, श्रीवीरस्वामिने नमः।।

अहिंसा यात्रा
आचार्यश्री महाश्रमण